दिल्ली पब्लिक स्कूल, जम्मू

अभ्यास पत्र

सत्र : 2017–18

कक्षा : नवमीं　　समय : 1 घंटे

विषय : हिंदी

सामान्य निर्देश :–

- **प्रश्न–पत्र के क, ख, ग और घ चार खंड हैं।**
- **प्रश्नों के सभी उपभागों के उत्तर एक साथ लिखिए।**
- **लेखन स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें।**

(खंड–क)

प्र1) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली जीवन के लिए घोर अभिशाप सिद्ध हो रही है। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत एवं स्वावलंबी बनाने का साधन होना चाहिए, किंतु शिक्षा में यह गुण नहीं है। आज का सुशिक्षित युवग वर्ग न केवल दूसरों के लिए बल्कि स्वयं अपने लिए भी दुखदायी बन रहा है। देश में बेरोज़गारी इंजीनियरों, वकीलों, वैज्ञानिकों तथा डॉक्टरों की विशाल संख्या देश के लिए अभिशाप बन गई है। शिक्षा ने उनमें 'सादा जीवन, उच्च विचार' और सेवा–वृत्ति उत्पन्न नहीं की। अन्यथा वे गाँवों को स्वर्ग बनाकर राष्ट्र–हित कर पाते, देश की सच्ची सेवा कर पाते।

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में नगरोचित तत्त्वों की प्रधानता है, जबकि भारत माता ग्राम–वासिनी है। ग्राम–विकास की योजनाओं को शहरी शिक्षण तत्व कैसे पूरा कर सकते हैं? उलटा इससे गाँव की ओर विमुखता ही जाग्रत हुई है।

भारत जनतंत्र का उपासक है। यह जीवन–शैली भारत ने अपनाई है। जनता की शिक्षा का माध्यम जनता की भाषा होनी चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से भारत का नागरिक विदेशी आचार–विचार, रहन–सहन, जीवन–पद्धति, सभ्यता और संस्कृति ही ग्रहण करेगा। हम उपनिषदों और वेदों का आदर इसलिए नहीं करते कि वे हमारे दर्शन–ग्रंथ हैं, ज्ञान के आगार हैं, अपितु इसलिए करते हैं कि मैक्समूलर और ब्लावेट्स्की ने इनकी प्रशंसा की है। हम अपने दर्शन–ग्रंथों को संस्कृत में नहीं, अंग्रेज़ी के माध्यम से पढ़कर गौरवान्वित होते हैं।

क) वर्तमान शिक्षा–प्रणाली जीवन के लिए घोर अभिशाप कैसे सिद्ध हो रही है?

ख) वर्तमान शिक्षा–प्रणाली ने युवक वर्ग पर क्या प्रभाव डाला है?

ग) वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में किन तत्त्वों की प्रधानता है?

घ) शिक्षा का माध्यम जनता को भाषा ही क्यों होनी चाहिए?

ङ) विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से क्या प्रभाव पड़ेगा?

च) उचित शीर्षक दीजिए।

छ) 'सु' उपसर्ग से बने शब्द छाँटिए।

प्र2) निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

सामने कुहरा घना है
और मैं सूरज नहीं हूँ
क्या इसी अहसास में जिऊँ
या जैसा भी हूँ नन्हा–सा
इक दीया तो हूँ
क्यों न उसी की उजास में जिऊँ?
हर आने वाला क्षण
मुझे यही कहता है–
अरे भई, तुम सूरज तो नहीं हो
और मैं कहता हूँ–
न सही सूरज

एक नन्हा दीया तो हूँ
जितनी भी है लौ मुझ में
उसे लेकर जिया तो हूँ।
कम–से–कम मैं उनमें तो नहीं
जो चाँद दिल के बुझाए बैठे हैं
हर रात को अमावस बनाए बैठे हैं
उड़ते फिर रहे थे जो जुगनू आँगन में
उन्हें भी मुट्ठियों में दबाए बैठे हैं।

क) 'सामने कुहरा घना है और मैं सूरज नहीं हूँ'– कथन में कुहरा और सूरज किसके प्रतीक हैं? स्पष्ट कीजिए।

ख) 'जैसा भी हूँ नन्हा–सा एक दीया तो हूँ'– कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

ग) 'वह कविता आशावादी है।' सिद्ध कीजिए।

घ) सारी सुविधाओं को अपने वश में किए बैठे लोगों को कवि ने किन रूपों में चित्रित किया है?

ङ) 'रात को अमावस बनाने' का आशय स्पष्ट कीजिए।

च) कविता का शीर्षक लिखिए।

खण्ड–ख

प्र3) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :–

क) मनुष्य, कृपण (वर्ण विच्छेद कीजिए)

ख) मज़दूर, खौफ (उचित स्थान पर नुक्ते का प्रयोग करें)

ग) कम्पन, अंगूर (उचित स्थान पर उनुस्वावर तथा अनुनासिक का प्रयोग करें)

घ) नव + ऊढ़ा, नदी + आगम (संधि करें)

ङ) गुरुपदेश, नवोदित (संधि विच्छेद करें)

च) संसर्ग, रुकावट (मूल शब्द तथा उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग करें)

खण्ड–ग

प्र4) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

क) बाज़ार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या–क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

ख) रैदास को क्यों लगता है कि उनके प्रभु उन पर द्रवित हो उठे हैं?

ग) सागर की अपेक्षा पंक जल को श्रेष्ठ क्यों बताया गया है?

प्र5) पाठ दुख का अधिकार समाज में फैले अंधविश्वासों और ऊँचनीच के भेदभाव का पर्दाफाश करती है। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"रहिमन निज मन की विधा, मन ही राखो गोय"–कवि रहीम ने ऐसा क्यों कहा है अपने विचारों से स्पष्ट कीजिए।

प्र6) गिल्लू एक संवेदनशील प्रणी है। सिद्ध कीजिए।

खण्ड–घ

प्र7) अपने छोटे भाई को कुसंगति से बचने के लिए पत्र लिखिए।

अथवा

प्र8) अनुच्छद लिखिए :– 'अच्छा स्वास्थ्य–महा वरदान'

संकेत बिंदु :– प्रस्तावना, स्वास्थ्य का महत्त्व, स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार, संतुलित विचार, निष्कर्ष।

अथवा

वाद्ययंत्र विक्रेता हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।